



Web: parmeshwarkaniyam.org

ईश्वर की व्यवस्था: परिचय

ईश्वर की व्यवस्था: प्रेम, न्याय, और पुनर्स्थापना का मार्ग

ईश्वर की व्यवस्था केवल आदेशों का समूह नहीं है, बल्कि यह उनके प्रेम और न्याय का प्रतीक है। यह विद्रोही आत्माओं को पुनर्स्थापित करने और सृष्टिकर्ता से मेल कराने का मार्ग प्रदान करती है।

ईश्वर की व्यवस्था के बारे में लिखने का महत्व

ईश्वर की व्यवस्था के बारे में लिखना एक साधारण मानव के लिए संभवतः सबसे महान कार्य है। यह केवल दिव्य आज्ञाओं का समूह नहीं है, बल्कि उनके दो गुणों—प्रेम और न्याय—का प्रतीक है।

यह व्यवस्था ईश्वर की अपेक्षाओं को मानवीय संदर्भ और वास्तविकता में प्रकट करती है, उन लोगों को पुनर्स्थापित करने के लिए जो पाप के आगमन से पहले की स्थिति में लौटना चाहते हैं।

विद्रोही आत्माओं का उद्धार

चर्चों में प्रचलित शिक्षाओं के विपरीत, प्रत्येक आज्ञा शाब्दिक और अडिग है। यह परम उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाई गई है: विद्रोही आत्माओं का उद्धार।

हालांकि इसे मानने का किसी पर दबाव नहीं है, लेकिन केवल वही, जो इसका पालन करता है, पुनर्स्थापित और सृष्टिकर्ता के साथ मेल किया जाएगा।

दिव्यता की झलक साझा करने का विशेषाधिकार

इस व्यवस्था के बारे में लिखना दिव्यता की झलक साझा करना है। यह एक दुर्लभ विशेषाधिकार है, जो विनम्रता और श्रद्धा की मांग करता है। ईश्वर की व्यवस्था पृथ्वी पर जीवन को ईश्वर की इच्छाओं के अनुसार

संरखित करने का मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह साहसी आत्माओं के लिए राहत और आनंद का स्रोत बनती है।

ईश्वर की व्यवस्था पर एक व्यापक अध्ययन

इन अध्ययनों का उद्देश्य

इन अध्ययनों में, हम ईश्वर की व्यवस्था के बारे में हर उस महत्वपूर्ण बात को कवर करेंगे जो वास्तव में जानने योग्य है, ताकि जो लोग ऐसा करने की इच्छा रखते हैं, वे अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन कर सकें और ईश्वर द्वारा स्थापित निर्देशों के साथ पूरी तरह से संरखित हो सकें।



ईश्वर का पवित्र और शाश्वत कानून प्रारंभ से ही विश्वासपूर्वक रखा गया है। यीशु, उनका परिवार, मित्र, प्रेषित, और शिष्य सभी ने ईश्वर की आज्ञाओं का पालन किया।

विश्वासयोग्य लोगों के लिए राहत और आनंद

मनुष्य को ईश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए बनाया गया था। जो लोग साहसी हैं और वास्तव में चाहते हैं कि उन्हें क्षमा और उद्धार के लिए पिता द्वारा यीशु के पास भेजा जाए, वे इन अध्ययनों को राहत और आनंद के साथ ग्रहण करेंगे:

- **राहत:** क्योंकि ईश्वर ने, दो हजार वर्षों की ईश्वर की व्यवस्था और उद्धार पर गलत शिक्षाओं के बाद, हमें यह सामग्री तैयार करने का कार्य सौंपा, जिसे हम मानते हैं कि इस विषय पर मौजूद लगभग सभी शिक्षाओं के खिलाफ जाता है।
- **आनंद:** क्योंकि सृष्टिकर्ता की व्यवस्था के साथ सामंजस्य में होने के लाभ शब्दों से परे हैं, जिन्हें साधारण प्राणी व्यक्त कर सकते हैं। ये लाभ आध्यात्मिक, भावनात्मक और शारीरिक हैं।

व्यवस्था पर तर्क-वितर्क: ईश्वर की पवित्रता का सम्मान

ईश्वर की व्यवस्था का औचित्य सिद्ध करना अनावश्यक है। इसे चुनौती देना स्वयं सृष्टिकर्ता का अपमान है।

इन अध्ययनों का मुख्य उद्देश्य तर्क-वितर्क या वैचारिक बचाव नहीं है। ईश्वर की व्यवस्था, जब सही ढंग से समझी जाती है, अपने पवित्र स्रोत को ध्यान में रखते हुए किसी औचित्य की आवश्यकता नहीं रखती।

किसी ऐसी चीज़ पर अंतहीन बहस करना, जिसे कभी सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए था, स्वयं ईश्वर का अपमान है।

एक सीमित प्राणी, जो सृष्टिकर्ता के नियमों को चुनौती देता है, अपने ही भले के लिए इस रवैये को तुरंत ठीक करे। यह आत्मा की भलाई के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मसीही यहूदी धर्म से आधुनिक ईसाई धर्म तक का परिवर्तन

यह श्रृंखला यह समझने में मदद करती है कि मसीही यहूदी धर्म, जहाँ ईश्वर की व्यवस्था का पालन आशीर्वाद माना जाता था, से वर्तमान ईसाई धर्म में परिवर्तन कैसे हुआ।

यद्यपि हम इस बात का समर्थन करते हैं कि जो कोई भी स्वयं को यीशु का अनुयायी कहता है, उसे पिता की व्यवस्था का पालन करना चाहिए, जैसा स्वयं यीशु और उनके प्रेरित करते थे, हम यह भी स्वीकार करते हैं कि मसीही समुदाय में उनकी व्यवस्था के प्रति बहुत बड़ी क्षति हुई है।

ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि

मसीह के स्वर्गारोहण के लगभग दो हजार वर्षों में हुए परिवर्तनों का स्पष्टीकरण आवश्यक हो गया है। कई लोग यह समझना चाहते हैं कि कैसे मसीही यहूदी धर्म, जहाँ ईश्वर की व्यवस्था के प्रति वफादारी थी और इसे आशीर्वाद माना जाता था, से वर्तमान ईसाई धर्म में यह विचार स्थापित हो गया कि व्यवस्था का पालन करना "मसीह को अस्वीकार" करने के समान है।

इस परिवर्तन का परिणाम यह हुआ है कि वह व्यवस्था, जिसे पहले "धन्य है वह व्यक्ति जो दिन-रात इसमें मनन करता है" (भजन संहिता 1:3) के रूप में सम्मानित किया जाता था, अब इसे ऐसा नियमों का समूह माना जाता है, जिसका पालन करने से "आग की झील में गिरने" का डर उत्पन्न होता है।

अवज्ञाकृत आज्ञाओं पर ध्यान

इस शृंखला में, हम उन ईश्वर की आज्ञाओं को भी विस्तार से कवर करेंगे जो चर्चों में विश्वभर में, लगभग बिना किसी अपवाद के, सबसे अधिक अवज्ञाकृत हैं, जैसे [खतना](#), [सब्त](#), [खाद्य कानून](#), [बाल और दाढ़ी के नियम](#), और [त्ज़ीतज़ित](#)।

हम यह समझाएंगे कि कैसे ये स्पष्ट ईश्वर की आज्ञाएँ नए धर्म में पालन करना बंद हो गईं जिसने अपने आप को मसीही यहूदी धर्म से अलग कर लिया, लेकिन साथ ही यह भी बताएंगे कि इन्हें शास्त्रों में दिए गए निर्देशों के अनुसार कैसे ठीक से पालन करना चाहिए—रब्बिनिक यहूदी धर्म के अनुसार नहीं, जिसने यीशु के दिनों से, पवित्र, शुद्ध और शाश्वत ईश्वर की आज्ञाओं में मानव परंपराओं को शामिल कर लिया है।